जनवरी-फरवरी तक तैयार मानी जाती है। पत्तियां सूखने के बावजूद 2 माह तक कंद नहीं निकालना चाहिए।

फसल प्राप्ति

जब कंद बाहर से हल्के गहरे भूरे हो जाये तब यह निकाले जा सकते हैं। मूसली के कन्दों को कुदाली की सहायता से, हाथ से ही निकालना चाहिए व ट्रेक्टर आदि प्रयोग नहीं करना चाहिए। मूसली के कन्दों की खुदाई से पूरे कन्द निकालने के बाद बड़ी फिंगर्स को तोड़कर अलग कर लिया जाता है तथा छोटी-छोटी फिंगर्स को क्राउन सहित अगली फसल हेतु संरक्षित कर लेना चाहिए।

रासायनिक संगठन :

इसमें ऐस्पैरेगिन, अलब्युमिनयुक्तपदार्थ, पिच्छिल द्रव्य तथा सेल्युलोज होता है।

गुण :

गुण - गुरू स्निग्ध, रस मधुर, निपाक मधुर, वीर्य शीत। यह स्निग्धता एवं मधुरता के कारण कफवर्धक तथा वातपितशामक है। यह शुक्रम, मूत्रल, बल्य, वृहंण एवं रसायन है।

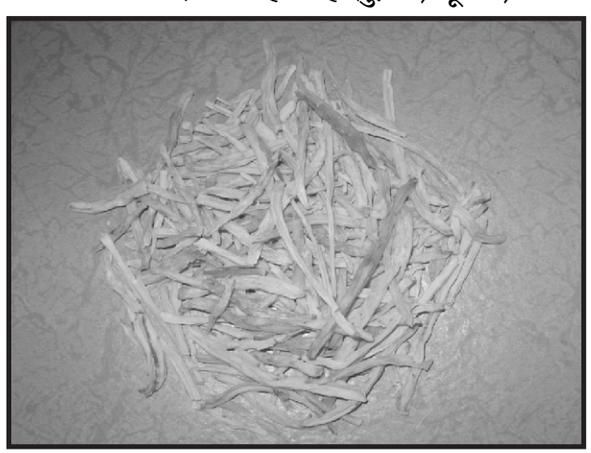

प्रयोज्योग : कंद

मात्रा : 3-6 ग्राम चूर्ण

योग : मूसलीपाक

मुद्रक : फाईन आर्ट प्रिन्टर्स, जाटवाड़ी, उदय. फो.: 0294-2411406, 94602 64241

सफेद मुसली

वैज्ञानिक नाम
एस्पेरेगस ऐडसेन्डेन्स

राजस्थान वन उपज संग्राहक एवं प्रशोधक समूह समर्थक समिति
282, पुराना चुंगीनाका, फतेहपुरा, उदयपुर (राज.)
फोन एवं फैक्स : 0294-2451478
email: samarthak@sancharnet.in
Website: www.samarathak.org

सफेद मूसली

संस्कृत नाम : मुशली

हिन्दी : सफेद मूसली

गुजराती : धोली मूसली

लेटिन : एस्पेरेगस ऐडसेन्डेन्स (Asparagus Adscendens)

परिचय :

इसका अर्थ उत्थित बहुशाखायुक्त कष्टकित क्षुप होता हे। काण्ड लम्बा, गोल, दृढ, चिकना, श्वेताभ होती है। शाखाएँ घूसरवर्ण, परिखायुक्त कोणीय तथा आरोहणशील होती हैं। पर्वान्तराल बहुत छोटे होते हैं।

सफेद मुसली का पौधा 1-1.5 फुट ऊंचा व तनारहित होता है। इसकी पत्तियां मूलीय, रेखीय, चपटी व नुकीली शीर्ष वाली होती हैं। इसका पुष्पक्रम रेसीम प्रकार का होता है, जिसमें सफदे फूल गुच्छे में लगे होते हैं। इसका फल केप्सुल होता है, जो दीर्घवृर्ताकार होता है। बीज चपटे गोल काले रंग के होते हैं। सफेद मुसली की जड़ें बेलनाकार, कंदिल व अधिकतम 10 इंच तक गहरी होती हैं। यह क्राउन के साथ ही मोटाई से निकलती हैं तथा फिर कुछ कम मोटाई लेते हुए एक सी रहती हैं। इसके एक गुच्छे में कम से कम 10-12 फिंगर्स होते हैं।

पुष्प 1-2 इंच लम्बे प्राय: शीर्षभाग पर विभक्तऔर पत्रयुक्तहोती हैं, जिनमें) इंच व्यास के पुष्प लगते हैं। फल (-) इंच व्यास के एकबीजी होते हैं। मूल स्तम्भ से श्वेत, लम्बगोल रोमश मूलों का गुच्छा निकला रहता है, ये पिच्छिल होते हैं और जल में देने से फूल जाता है।

सफेद मूसली लिलिएसी कुल का महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। यह सागौन के वनों में पाया जाने वाला छोटा शाखीय पौधा है, जिसकी जड़ें आयुर्वेद दवाओं में बहुतायत से प्रयोग में लाई जाती है। यह पौधा सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में सागौन, मिश्रित वनों में तथा बघेलखंड व नमर्दासोन घाटी में मुख्यत: पाया जाता है। अत्यधिक दोहन के कारण अब यह पौधा वनों से लुप्त हो रहा है। सफदे मुसली की आपूर्ति वनों से न हो पाने के कारण इसकी व्यावसायिक खेती के प्रयास सफल व लाभकारी है।

उपयोगी भाग एवं औषधीय गुण

सफेद मूसली हर प्रकार की शारीरिक शिथिलता दूर करने में प्रयोग की जाती है। इसलिए बलवर्धक दवाओं, टॉनिक आदि में इसका प्रयोग बहुतायत से होता है। मूसली मधुमेह, गठिया वात, प्रसवोपरांत होने वाली बीमारियों में, उत्तेजक के रूप में भी उपयोग की जाती है।

कृषि तकनीक

सफेद मूसली रेतीली दोमट मिट्टी नर्म व उत्तम जल निकासी वाली भूमि में अच्छी उपज देती हैं। इसके लिए नम, आर्द्र जलवायु उपयुक्त रहती है। मूसली का प्रवर्धन क्रउन अथवा क्राउन युक्त फिंगर्स से किया जाता है। पिछली फसल के क्राउन से पौधे तैयार किये जा सकते हैं। यह ध्यान दिया जाये कि लगाने हेतु उपयुक्त फिंगर्स क्षतिग्रस्त न हों तथा क्राउन का कुछ भाग जरूर हो।

तैयार किये गये खेतों में 5-10 टन गोबर खाद प्रति एकड़ अच्छी तरह मिला दी जानी चाहिए। इसके पश्चात् खेतों में सामान्य से 6-12 इंच तक ऊंचे बेड्स बनाये जाते हैं ताकि पानी के ठहराव की संभावना न हो। मुसली लगाने हेतु 3-4 ग्राम वजन के फिंगर्स (क्राउनयुक्त) उपयुक्त होते हैं तथा एक एकड़ हेतु कम से कम 80,000 बीज फिंगर्स की आवश्यकता होती है। यह 450 रु. प्रति किग्रा की दर से प्राप्त किया जा सकता है। इन फिंगर्स को 6-6 इंच की दूरी पर रोपित किया जाता है। रोपण के समय फिंगर्स को बैवस्टिन के घोल में डुबा कर लगाना अति उत्तम होगा। मूसली का रोपण समय जुलाई-अगस्त माह है। वर्षा काल के पहले 3 माह तक इसमें सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, तदोपरांत 10 दिन के अंतराल में सिंचाई की जानी चाहिए।

मूसली की फसल अवधि 6-8 माह है तथा जुलाई में लगाई गई फसल